लोक नृत्य → कार्यक्रम को आनन्दमय बनाने हेतु

↓

वर्ग = 4

- क्षेत्रीय नृत्य
  - ↓ क्षेत्र विशेष मे किये जाते है।
- व्यावसायिक नृत्य
- जातीय नृत्य
- सामाजिक नृत्य / धार्मिक नृत्य

① क्षेत्रीय नृत्य :→

① गैर | घेर नृत्य :→ मेवाड़ व बाड़मेर में करते हैं

- → गोल घेरे में करते हैं नर्तक - गेरिये कहलाते हैं
- → पुरुष प्रधान नृत्य
- → होली के दूसरे दिन शुरू होता है और 15 दिन चलता है
- → वाद्य यंत्र → ढोल, मांदल, थाली

पोशाक
- मेवाड़ → सफेद अंगरखी, धोती, लाल पगड़ी
- बाड़मेर → सफेद आंगी, लम्बी फ्रोक, कमर में चमड़े का पट्टा, हाथ में तलवार

नोट: → ① घूमर गैर नृत्य → भीलवाड़ा

उद्भव - 1970 (निहाला अजमेरा द्वारा)

② तलवारों की गैर → मेनार (उदयपुर), चित्तौड़गढ़

③ आंगी बांगी गैर → लाखेटा (बाड़मेर)

② गीदड़ नृत्य: → शेखावाटी (बच्चों की गीदड़ गोड़ कहलाती है)

होली पर प्रहलाद स्थापना के बाद

पुरुष प्रधान (पुरुष जो महिलाओं की पोशाक मे भाग लेते है उन्हें गणगौर / मेहरी कहते है

मारवाड़ी भाषा मे नृत्य को खालना कहते है

③ जिंदाद नृत्य :→ शेखावाटी
- ↳ युगल नृत्य (स्त्री + पुरुष)
- ↳ वाद्य यंत्र → ढोलकी

④ लहूर नृत्य :→ शेखावाटी —
- ↳ लहूर का अर्थ मीठी खुजली

⑤ चंग नृत्य :→ शेखावाटी
- ↳ होली पर (पुरुष प्रधान)
- ↳ वाद्य यंत्र - चंग

⑥ ढप नृत्य : → शेखावाटी
- ↳ बसंत पंचमी
- ↳ वाद्य यंत्र <u>मंजीरा</u>

⑦ <u>कबूतरी नृत्य</u> : → चुरू
- ↳ <u>महिलाओं द्वारा</u>

⑧ # <u>ढोल नृत्य</u> : → जालौर (<u>पुरुष प्रधान</u>)
- ↳ कलाकारों का मुखिया → <u>थाकना</u>
- ↳ उजाला में लाने का श्रेय → जयनारायण व्यास

(9) लूंबर नृत्य : → जालौर
- → महिलाओं द्वारा
- → होली पर्व पर

(10) हरणों / लोवड़ी नृत्य : → मेवाड़ क्षेत्र
- → दीपावली
- → बालकों द्वारा

(11) बम रसिया नृत्य → अलवर, भरतपुर (प्रसिद्ध - डीग का)
- → फाल्गुन मास मे नई फसल की खुशी मे
- → पुरुष प्रधान (वाद्य यंत्र → नगाड़ा, थाली, चिमटा, ढोलक)

(12) हुरंगा नृत्य :→ भरतपुर (युगल नृत्य)
↳ चैत्र कृष्णा अष्टमी से पंचमी तक

(13) चरकुला नृत्य :→ भरतपुर
~~भरतपुर~~
↳ प्रसिद्ध → उत्तर प्रदेश (बैलगाड़ी में दीपक जलाना)
↳ महिलाओं द्वारा किया जाता है।
↳ सिर पर बर्तन रखना और उसमे दीपक जलाना।

(15) अग्नि नृत्य :→ कतरियासर (बीकानेर)

→ धधकते अंगारों पर (अंगारों का ढेर धुँणा कहलाता है)

→ जसनाथी संप्रदाय के सिद्ध करते है।

→ नृत्यक फतै फतै का उच्चारण करते हुए धुणे मे प्रवेश करते है। व नाचते हुए सिद्ध रुस्तम जी का उच्चारण करते है)

→ पुरुष प्रधान नृत्य

→ फाल्गुन मास मे करते है।

→ प्रसिद्ध → महाराजा गंगा सिंह जी ने किया

(15) <u>डांडिया नृत्य</u> :→ गुजरात

↳ राज्य मे मारवाड़ (डांडिया का <u>अर्थ डंडा</u>)

(16) <u>घुड़ला नृत्य</u> :→ जोधपुर

↳ स्त्री उत्थान नृत्य (रात्रि मे करते है)

→ जोधपुर के पीपाड़ नामक स्थान पर 140 कंवारी कन्या शिव पार्वती की पुजा कर रही थी जिन्हे मल्लू खां का सेनापति घुड़ले खां उठाकर ले गया।

इन लड़कियों को जोधपुर के शासक सातलदेव ने चैत्र कृष्णा <u>अष्टमी</u> को मुक्त करवाई।

यह नृत्य चैत्र कृष्णा अष्टमी को छिद्रित मटके मे दीपक जलाकर करते है।

उस मटके को चैत्र शुक्ला तृतीया को तालाब मे विसर्जित करते है।

मटका घुड़ले का प्रतीक माना जाता है।

- घुड़ले का प्रतीक

नृत्य को राष्ट्रीय मंच प्रदान → रूपायन संस्थान बोरुंदा (जोधपुर) के अध्यक्ष कोमल कोठारी ने किया।

(17) मांडल / नाहर नृत्य :→ भीलवाड़ा

- ↳ होली के 13 दिन बाद किया जाता है (रंग तेरस पर)
- ↳ पुरुष प्रधान (शरीर पर रुई लपेटकर व नकली सींग लगाकर करते है)

मांडल | नाहर नृत्य - भीलवाड़ा

(18) मयूर/ भैरव नृत्य :→ ब्यावर

- ↳ बादशाह के मेले में करते हैं
- ↳ बादशाह की सवारी के आगे बीरबल नाचता है

(19) पेजण नृत्य :→ डूंगरपुर-बांसवाड़ा

- ↳ दीपावली पर्व पर
- ↳ पुरुषों द्वारा नारी का रूप धारण करके।

(20) पाली नोच नृत्य :→ बांसवाड़ा

- ↳ विवाह पर्व पर।

(21) **बिन्दौरी नृत्य** :- झालावाड़
↳ विवाह व होली पर

(22) **ढोला मारू नृत्य** :- झालावाड़

(23) **डांग नृत्य** :- नाथद्वारा (राजसमंद)
- होली पर्व पर श्रीनाथ जी की आराधना मे
- नृत्क एक दूसरे पर देवर भाभी के रूप मे रंग से डाल करते है

(24) **खारी नृत्य** :→ मेवात (अलवर)
↳ दुल्हन की विदाई पर उसकी सहेलियों द्वारा यह नृत्य किया जाता है।

(25) **हिंडोला नृत्य** → जैसलमेर
↳ युगल नृत्य (स्त्री + पुरुष)
↳ पूर्वजों का आह्वान करते हुए।

(26) **मोहिनी नृत्य** :→ कांठल (प्रतापगढ़)
↳ स्त्रियों द्वारा विवाह मे

(27) **चौगोला** → डूँगरपुर
↳ युगल नृत्य (होली पर)

(28) **कानूडा नृत्य** :→ चौहटन (बाड़मेर)
युगल नृत्य
कृष्ण जन्माष्टमी पर

(2) व्यावसायिक लोक नृत्य :→

↳ नृत्य का प्रदर्शन कर आजीविका चलाना।

(1) तेरह ताली नृत्य :→

कामड़ जाति की महिलाएं करती है।

- → रामदेवजी के मेले में

- → तेरह मंजीरे बांध कर (9 दाएं पैर में, 2 हाथ में, 2 कोहनी पर)
- → बैठकर नृत्य किया जाता है।
- → नृत्य के दौरान पुरुष गीत गाते हैं।
- → प्रमुख कलाकार → मांगीबाई, कमलादास, परमदास, लक्ष्मण दास

नोट: → **मांगी बाई** → तेरह ताली नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना

- → जन्म → बानोला गाँव (चित्तौड़गढ़)
- → विवाह → पदरला गाँव (पाली)
- → पति → भैरूदास
- → **पुरस्कार** → संगीत नाटक अकादमी (1990)
- → गुरु → गोरम दास

② भवाई नृत्य : → उद्गम – गुजरात

- → राज्य मे मेवाड़ (उदयपुर) का प्रसिद्ध है।
- → नृत्यो मे सर्वाधिक लोक प्रिय नृत्य
- → नृत्य थाली के किनारो पर, काँच के टुकड़ो पर, तलवार की धार पर करते है
- → प्रवर्तक → बाघो जी जाट (केकड़ी) – अजमेर
- → ख्याती → भारतीय लोक कला मण्डल के अध्यक्ष देवीलाल सांभर ने दिलाई
- → प्रमुख नृत्यक → रूप सिंह शेखावत, सांगीलाल, तारा शर्मा

नोट → जयपुर की अस्मिता कला ने यह नृत्य सिर पर 111 मटके रखकर किया जिसका नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ड रिकार्ड मे दर्ज है

③ कच्छी घोड़ी नृत्य :→ शेखावाटी

- → पुरुष प्रधान
- → पैटर्न बनाने की कला पर आधारित
- → कच्छी घोड़ी का अर्थ → काठ/लकड़ी की घोड़ी

इस नृत्य मे 4 व्यक्ति
आमने सामने व 8 व्यक्ति
एक पंक्ति मे खड़े होते है)

③ जातीय लोक नृत्य :→

Trick गवरी गैर ने दियो रमणी हार

गवरी, गैर, नेजा, द्विचकी, रमणी, हाथीमना

① भील जनजाति के नृत्य

① गैर नृत्य → उदयपुर

↳ पार्वती पीहर गमन की घटना पर आधारित

↳ भाद्रपद पूर्णिमा से एक दिन पहले।

(2) गवरी / राई नृत्य

- पूरे भारत का एकमात्र नृत्य जो दिन मे प्रस्तुत किया जाता है
- शिव व भस्मासुर की कहानी पर आधारित
- शिव का रूप धारण करने वाला पात्र पुरिया
- अन्य पात्र खेल्या
- गवरी नाट्य के प्रसंग जोड़ना गवरी की धाई कहलाता है
- प्रमुख सुत्रधार → कट् कुड़्या
- झामट्या पात्र दोहे बोलता है खट्कुड़्या दोहो को दोहराता है
- कुम्हार के घर से मिट्टी का हाथी लाकर विसर्जित करते है उसे
  घड़ावण / वलावण कहते है
- रक्षा बन्धन के दूसरे दिन शुरू होकर 40 दिन तक चलता है
- 40वां दिन चेलम कहलाता है

③ नेजा नृत्य :→

- → युगल नृत्य
- → होली के तीन दिन बाद किया जाता है।
- → डंडे पर नारियल बांध दिया जाता है। पुरुष उसे तोड़ता है व महिला कोड़े मारती है

④ द्विचक्री :→

- → युगल नृत्य पुरुष व महिलाएं दो चक्कर बनाकर करती है।
- → बाहरी चक्कर में पुरुष व अन्दर महिलाएं
- → विवाह पर्व पर

⑤ हाथी मना नृत्य :→
भीलों द्वारा विवाह में प्रदर्शित किया जाता है

⑥ युद्ध नृत्य :→
हाथ में तीर, तलवार लेकर करते है
→ ऊँची आवाज में फायरे-फायरे का उच्चारण करते है
→ पुरुष प्रधान नृत्य
→ नृत्य के दौरान घायल हो जाते है
→ राज्य सरकार ने इसे प्रतिबन्धित कर दिया।

(7) घुमरा / घुमर नृत्य

- महिलाओं द्वारा अर्द्ध वृत बनाकर किया जाता है।
- गुजरात के गरबा नृत्य पर आधारित

(8) रमणी नृत्य → विवाह में।

② गरासिया जन जाति के नृत्य

Trick
वालर मामो गौर देखन जग मे कुदा

- वालर
- मोरिया
- गौर
- मांदल
- जवारा
- गर्वा (?)
- कूदना

① **वालर नृत्य** :→ सिरोही मे
- → गरासियो की चूमर
- → युगल नृत्य (स्त्री व पुरुष अर्द्ध वृत बनाकर करते है)
- → बिना वाद्य यंत्र के

② **लूर नृत्य** :→ मेले व शादी मे लूर गौत्र की महिलाओं द्वारा
- → रिस्ते की मांग करते हुए

③ कूद नृत्य
→ युगल नृत्य

④ मांदल : →
स्त्री प्रधान नृत्य

⑤ गौर नृत्य
गणगौर पर
→ युगल नृत्य

⑥ ज्वारा नृत्य : →
युगल नृत्य → हाथ में ज्वार की बालियां लेकर
→ होलिका दहन के बाद चारों तरफ करते थे

⑦ रायण नृत्य → पुरुषों द्वारा स्त्रीयों के वस्त्र पहनकर

सहरिया जन जाति के नृत्य

Q: सहरियो ने शिकार मे लहगा पहन इन्द्र को झेला

↳ शिकारी ↳ लहंगी ↳ इन्द्रपरी ↳ झेला

1. शिकारी नृत्य :→ पुरुष प्रधान
2. लहँगी
3. इन्द्रपरी – विवाह मे
4. झेला → युगल नृत्य फसल पकाई पर

कथौड़ी जन जाति के नृत्य

① मावलिया
- नवरात्रों मे
- पुरूष प्रधान

② होली नृत्य
- महिलाऐं होली पर्व पर
- एक दूसरे के कंधे पर चढ़कर पिरामिड बनाती है

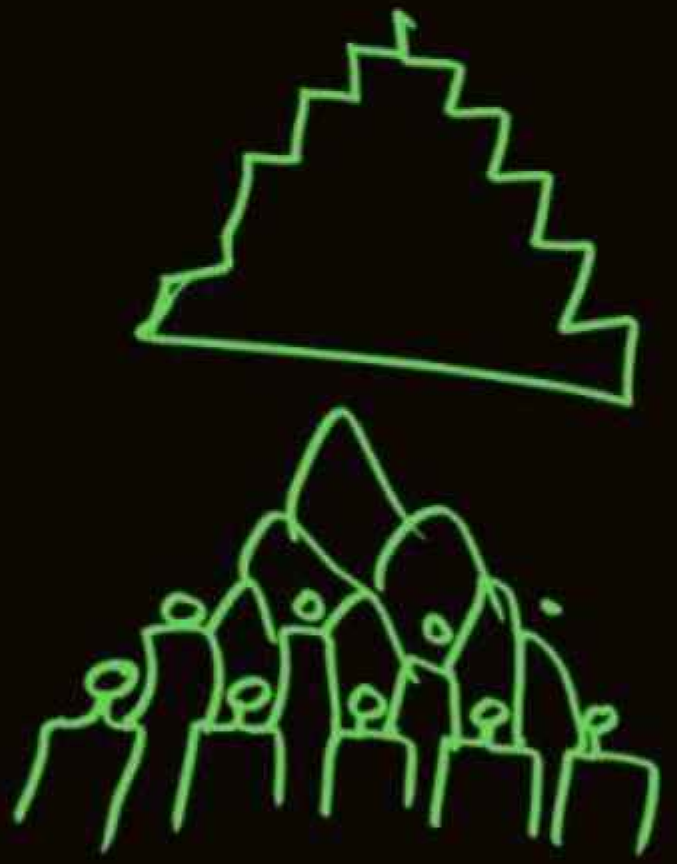

मेव जन जाति के नृत्य

① रणबाजा → मेवात (अलवर)

↳ युगल नृत्य

② रतवई नृत्य ← स्त्रीयों द्वारा

सिर पर खारी रखकर

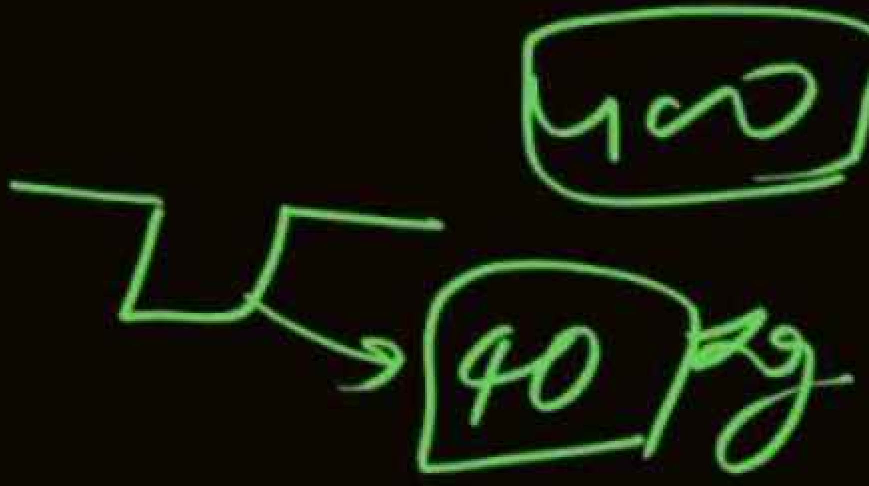

कांजर जन जाति के नृत्य

Trick: कांजरो ने फुंदी फुंदी का धाकड़ चकरी चलाई

फुंदी → फुंदी, धाकड़ → धाकड़, चकरी → चकरी

① **चकरी** – अविवाहित युवतियों द्वारा अस्सी कली का घाघरा पहन कर

② **फुंदी नृत्य** → महिलाओं द्वारा
- हाड़ौती क्षेत्र मे कजली तीज पर

③ **धाकड़ नृत्य** – झालापाव व बीरा के युद्ध मे झालापाव के विजय की खुशी मे

गुर्जर जन जाति के नृत्य

① **चरी नृत्य** :→ स्त्री प्रधान
- सिर पर पीतल का मटका रखकर उस में रुई के बीज जलाना
- प्रसिद्ध नृत्यांगना → फलकू बाई किशनगढ़ (अजमेर)

② **झूमर नृत्य** → पुरुष प्रधान
- धार्मिक अवसरों पर

बणजारा जन जाति के नृत्य

① **मछली नृत्य :** →

खुशी के साथ शुरू व दुख के साथ समाप्त होता है।

अविवाहित युवतियों द्वारा चैत्र पूर्णिमा के चांद को पति मानकर किया जाता है।

कालबेलिया जन जाति के नृत्य

Tribe - बाई पास — संकलिया/सपेरा
(कागड़ीया इ-डोनी → पणिहारी)

① **शंकरिया** :- युगल नृत्य
प्रेम कहानी पर आधारित
प्रमुख नृत्यांगना → गुलाबो, कंचन सपेरा, कमली

② **पणिहारी** :- युगल नृत्य (सिर पर मटका रखकर)

③ **कागड़िया** → भीख मांगते हुए

④ **इंडोणी** → युगल नृत्य

कालबेलिया नृत्य की प्रसिद्ध नृत्यांगना
→ गुलाबो बाई (किशनगढ़) अजमेर
विश्व धरोहर सूची मे शामिल नृत्य - 2010

माली जन जाति के नृत्य

① **चरवा नृत्य** :→ काँसे के घड़े में दीपक जलाकर

हरिजन जन जाति के नृत्य

बोहरा बोहरी :→ होली पर्व पर
↳ हाथ में कटोरा व झाड़ू लेकर

नट जन जाति के तथ्य

① कठपुतली

② मोर | शारीरिक

④ सामाजिक नृत्य

① घूमर → रा. का राज्य नृत्य
↳ गणगौर पर्व पर किया जाता है।

② घुड़. नृत्य
महिलाओं द्वारा
इन्द्र भगवान को प्रसन्न करने हेतु

राजस्थान के प्रमुख लोक गीत

① **विनायक गीत** :→ मांगलिक कार्य शुरू करने से पहले इस गीत के माध्यम से श्री गणेश जी को निमंत्रण देते है।

② **कुकड़ी गीत / कूकड़ला गीत** → रातिजगा का अन्तिम गीत

नोट :→ कूकड़ला गीत → विवाह में वर को भोजन करवाते समय भी गाते है।

③ **जलो जलाल गीत** :→ वर का डेरा देखने जाते समय वधू पक्ष की महिलाऐं गाती है।

④ सिठणे गीत :→ विवाह मे वर को भोजन करवाते समय गाया जाने वाला गाली गलोच युक्त गीत।

⑤ कलसड़ा :→ विवाह मे अतिथि आगमन पर गाते है।

⑥ पावणा :→ दामाद के ससुराल आने पर गाया जाता है।

⑦ मूमल गीत :→ श्रृंगारिक लोक गीत है जिसमे मूमल के नख शीख का वर्णन किया गया। (जैसलमेर)

⑧ टोला मारू गीत :→ सिरोही मे ढाढी गाते है

(9) गोरबन्द :→ मरु व शेखावाटी क्षेत्र मे गाया जाता है।
↳ नोट → गोरबन्द ऊँट के गले का आभूषण

(10) ओल्यूँ :→ (अर्थ-याद) किसी की याद मे या बेटी विदाई के समय

(11) काजलियो :→ होली पर्व पर (सोलह श्रृंगारो मे प्रधान श्रृंगार काजलिया)

(12) कुरजां गीत :→ विरहणी द्वारा प्रियतम को संदेश भेजने हेतु

(13) तेजा टेर :→ खेत जोतने से पहले किसान गाता है।

(14) पणिहारी :→ इस गीत के माध्यम से राजस्थानी स्त्री का पतिव्रत धर्म पर अटल रहना बताया गया है।

(15) हिचकी :→ किसी के याद करने पर हिचकी आती है यह गीत मेवात क्षेत्र मे गाया जाता है।

(16) पपैहा :→ इस गीत के माध्यम से प्रेमिका अपने प्रेमी से उपवन मे आकर मिलने का आग्रह करती है यह गीत दाम्पत्य जीवन आदर्श का परिचायक माना जाता है।

(17) कोरावा :→ जैसलमेर मे परदेश गये पति के वियोग मे गाया जाता है।

(18) सुंवटिया :→ भील स्त्री द्वारा परदेश गये पति को संदेश भेजने हेतु गाया जाता है।

(19) **दुप्पता** :→ विवाह मे दूल्हे की सालियों द्वारा गाया जाता है।

(20) **हमसीढ़ो** :→ मेवाड़ मे भील स्त्री व पुरुष साथ मिलकर गाते है।

(21) **पीपली** :→ शेखावाटी, बीकानेर व मारवाड़ क्षेत्र वर्षा ऋतु मे प्रदेश गये पति के वियोग मे गाया जाता है।

(22) **हिण्डोणी** :→

(23) **लावणी** :→ (अर्थ बुलाने से है)

↳ प्रेमिका द्वारा प्रेमी को बुलाने हेतु गाया जाता है।

(24) **सुपणा गीत** :→ स्वपन मे याद आने पर गाया जाता है।

(25) **घोड़ी गीत** :→ दुल्हे के निकासी के समय गाया जाता है।

(26) **कागा गीत** :→ अतिथि आगमन का शुकुन माना जाता है।

(27) **बीछुड़ा गीत** :→ हाड़ौती क्षेत्र का लोकप्रिय गीत है।

(28) पढ़ीड़ा गीत → हाड़ौती व ढूंढाड़ क्षेत्र मे मेलो मे गाया जाता है।

(29) **मोरिया गीत** :→ उस विरहणी की विरह व्यथा का वर्णन है जिसकी सगाई तो तय हो गई लेकिन शादी नही हुई।

(30) **जीरा गीत** :→ मारवाड़ क्षेत्र मे → पत्नी द्वारा पति से जीरा ना बोने का आग्रह किया जाता है।

(31) **चिरमी गीत** :→ नव विवाहिता द्वारा पिता व भाई की प्रतीक्षा मे गाया जाता है।

(32) **हालरिया** :→ जैसलमेर मे बालक जन्म पर गाते है।

(33) **बनजारा गीत** :→ इस गीत मे पत्नी द्वारा पति से परदेश जाने का आग्रह किया जाता है।

(34) **चौबाली** → राजस्थानी लोक गीतो का संस्मरण

(35) हरजस :→ वृद्ध व्यक्ति की मृत्यु पर राम व कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया जाता है।

(36) कामण गीत → विवाह में वर वधू को जादू टोनों से बचाने हेतु गाते हैं।

(37) चुरली गीत → बालक जन्म पर

(38) कुलरिया → मायरा भरते समय गाते हैं।

(39) हूँस गीत → गर्भवती महिला द्वारा सास से खाने की चीज मंगवाने का आग्रह किया जाता है

(40) मरसिया → मारवाड़ क्षेत्र मे प्रतिष्ठ व्यक्ति की मृत्यु पर गाते है

(41) बधावा गीत → मांगलिक कार्य समाप्त होने पर गाकर जी को बधाई देते है।

राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य

→ **ख्याल :** →

→ एक संगीत प्रधान लोक नाट्य थे

ख्याल की प्रतियोगिता → दंगल

ख्याल का सूत्रधार → हलकारा

भाग लेने वाले कलाकार → खिलाड़ी

ख्याल का दल → अखाड़ा

ख्याल के दल का मुखिया → उस्ताद

प्रमुख ख्याल

① जयपुरी ख्याल → जयपुर
↳ इस मे स्त्री पात्रो की भूमिका स्त्रियां निभाती है।

② कुचामनी ख्याल :→ नागौर
↳ प्रवर्तक → लच्छीराम
वर्तमान मे खिलाडी → उगमराज
कुचामनी ख्याल का स्वरूप - ऑपेरा कहलाता है।
प्रसिद्ध ख्याल → चांद नीलगिरी, रावरिड़मल, मीरां मंगल

③ **हेला ख्याल** : → लालसोट (दौसा) व सवाई माधोपुर

पवर्तक → हेला शायर

प्रारम्भ होने से पहले वाद्य यंत्र → बम

ख्याल का मुख्य वाद्य यंत्र → नौबत

④ **तुर्रा कलंगी** : →

पवर्तक → चन्देरी (mp) के हिन्दू संत तुकनगिरी
मुस्लिम संत शाह अली

तुकन गिरी - शिव के उपासक थे तथा शाह अली शक्ति के उपासक थे।

→ तुकनगिरी भगवा वस्त्र व शाहअली हरा वस्त्र धारण करते थे।

चन्देरी राजा जयचन्द तुर्रा गिरी व शाह अली विद्वता से प्रभावित होकर तुर्रा गिरी को अपने मुकुट का तुर्रा व शाह अली को कलंगी भेंट करते हैं तभी से इसका नाम तुर्रा कलंगी पड़ा

→ तुर्रा कलंगी चन्देरी से मेवाड़ आये और इस नाट्य का प्रचार प्रसार किया

→ राज्य मे यह नाट्य सेहद सिंह तुर्रा व हम्मीद बेग कलंगी के नेतृत्व मे प्रारम्भ हुआ।

→ राज्य मे यह घोसुण्डा, निम्बाहेड़ा (चित्तौड़गढ़) मे किया जाता थे

→ सेहद सिंह तुर्रा का ध्वज भगवा व हम्मीद बेग कलंगी का ध्वज हरा होता

नाट्य के दौरान दोनो पात्र आमने सामने बैठकर संवाद करते है जिसे गम्मत गान कहते है।

→ संवाद को बोल भी कहा जाता है।

→ वर्तमान मे कलाकार → जयगोपाल सोनी

→ इस नाट्य के दौरान स्त्री पात्रो की भूमिका पुरुष निभाते है

→ शेखावाटी व चिड़ावा के ख्याल

खण्डेला, चिड़ावा, सीकर

प्रसिद्ध → नानूराम खेल का

प्रसिद्ध कलाकार → नानूलाल व दुलिया राणा

→ **कन्हैया ख्याल** :- भरतपुर, धौलपुर, सवाई माधोपुर

→ इसमें महाभारत व रामायण का अख्यान किया जाता था

→ कन्हैया नामक लोकगीत **मेड़िया** नामक पात्र द्वारा गाया जाता है।

→ **भेंट का दंगल** → बाड़ी क्षेत्र (धौलपुर)

→ **ढप्पाली ख्याल / ढप्पोली ख्याल** → अलवर, भरतपुर

रम्मत नाट्य: →
जैसलमेर, बीकानेर
प्रारम्भ → जैसलमेर
जैसलमेर के तेज कवि द्वारा रम्मत प्रारम्भ की गई।

→ आयोजन → फाल्गुन शुक्ल पक्ष की अष्टमी से चतुर्दशी तक
→ वाद्य यंत्र → नगाड़ा ढोलक
→ रम्मत के कलाकारों को खेलार कहते है।
नोट → बीकानेर में रम्मत का आयोजन पाटों पर किया जाता है।
सर्वाधिक लोकप्रिय व प्रसिद्ध रम्मत - बीकानेर की मानी जाती है।

प्रसिद्ध कलाकार → मनीराम व्यास, फाग्गू महाराज, फूलजी भट्ट?

तमाशा नाट्य

प्रारम्भ → महाराष्ट्र

राज्य मे - जयपुर

→ राज्य मे तमाशा नाट्य का प्रारम्भ मोहन कवि द्वारा रचित धमाका मंजरी नाट्य से हुआ

प्रचलित - महाराजा मानसिंह I के समय मे।

→ जयपुर के महाराजा प्रतापसिंह ने तमाशा नाट्य के प्रसिद्ध कलाकार

बंशीधर भट्ट को अपने गुणीजन खाने में आश्रय देकर इनको प्रश्रय प्रदान किया।

नोट: बंशीधर भट्ट के समय तमाशा नाट्य की महिला नायिका का नाम → गोहर जान।

नौटंकी → प्रारम्भ → हाथरस (उत्तर प्रदेश)

→ राज्य में भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर

राज्य में प्रारम्भ → भूरेलाल बगा (डीग) द्वारा

प्रसिद्ध कलाकार → गिरीराज प्रसाद (कामा)

→ **स्वांग** :→

अर्थ - नकल उतारना

→ प्रसिद्ध कलाकार → जानकीलाल भांड

→ राज्य में → भीलवाड़ा।

→ **रामलीला** → श्री राम का वर्णन

प्रारम्भ → तुलसीदास

→ **रासलीला** → कृष्ण भगवान का वर्णन

प्रवर्तक → वल्लभाचार्य जी

वर्तमान स्वरूप → शिवलाल कुमावत

अली बक्शी ख्याल - अलवर

→ नोट - विसाऊ की रामलीला मुखौटे हेतु प्रसिद्ध है या मुखाभिनय हेतु

→ **चार बैत लोक नाट्य :** → टोंक

प्रारम्भ → फौजा उल्लाखां, अब्दुल करीम खां, खलिफा करीमखां